* चार्वाक का तत्वमीमांसा

चार्वाक दर्शन का आधार प्रमाण विचार है इसलिए यह प्रमाण विचार के आधार पर ही तत्वमीमांसा का भी खण्डन करते है।

* चार्वाक के अनुसार भूत अथवा जड़ - पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि का ज्ञान प्रत्यक्ष से होता इसलिए ~~है~~ ये 'चारो' तत्व सत्य है।

* आकाश का ज्ञान अनुमान से होता है अतः असत्य है।

* तत्वमीमांसीय विषय —

विश्व, ईश्वर
आत्मा
स्वर्ग-नरक
कर्मसिद्धांत

जगत/विश्व – स्वभाववाद, यंत्रवाद, निरिश्वरवाद

का ज्ञान कल्पनात्मक है अतः असत्य है।

पृथ्वी-गंध
अग्नि-रंग
वायु-स्पर्श
जल-स्वाद
आकाश-शब्द

* चार्वाक के अनुसार चार तत्वो - पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि के विविध अनुपातों में विविध सम्मिश्रण होने से ही —

बाह्य जगत
भौतिक शरीर
इन्द्रियाँ

सभी उत्पन्न होती है।

* चैतन्य भी भौतिक तत्वों के सम्मिश्रण से जीवित शरीर में उत्पन्न होता है अतः जीवित शरीर से भिन्न आत्मा नहीं है।

अन्वय :- विधि एवं व्यतिरेक विधि दोनों से यह सिद्ध है।

– अन्वय विधि - जब तक शरीर जीवित रहता है तब तक उसमें चैतन्य का अविर्भाव होता है।

– व्यतिरेक विधि - जब शरीर जीवित नहीं रहता तब चैतन्य भी नहीं रहता है।

भूतचैतन्यवाद या स्वभाववाद

* इस प्रकार चार्वाक "भूतचैतन्यवाद" स्थापित करते है।

अर्थात् - चैतन्यविशिष्टो देहः एव आत्मा।

* ताम्बूलपूगचूर्णानां योगाद् राग इवोत्थितम् जैसे पान, चूना, कत्था सुपारी में किसी में लालिमा नहीं है, किन्तु जब उन्हें मिलाकर खाया जाता है तो लाली उत्पन्न हो जाती है।

* चार्वाक का तत्व विचार में प्रमुख तीन है
ईश्वर, आत्मा, जगत आते है।

* चार्वाक के अनुसार जगत सत्य है। इन चारों भूतों से इस जगत का निर्माण हुआ है।

चार्वाक दर्शन – बृहस्पति (इन्द्र के पुरोहित)

चार्वाक के नामकरण के विषय में एक मत – * I. उसके प्रवर्तक ने इस मत को अपना उपदेश चार्वाक शिष्य को दिया। II. चार्वाक नामक राक्षस के द्वारा इस मत का प्रवर्तन होने के कारण इसे चार्वाक कहा गया।

चार्वाक शब्द 'चर्व' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'चबाना' अर्थात् जो व्यक्ति ईश्वर, आत्मा, परलोक तथा सारे ~~आध~~ आध्यात्मिक तथा नैतिक मूल्यों को चबा जाय, उसे चार्वाक कहते हैं।

चार्वाक शब्द दो शब्दों के संयोग से बना है। वे दो शब्द हैं – 'चारु' और 'वाक्'। चारु का अर्थ मीठा और वाक् का अर्थ वचन होता है। अतः चार्वाक का अर्थ – 'मीठे वचन बोलने वाला'

लोक – संसार
आयत – फैला हुआ

चार्वाक दर्शन को लोकायत मत भी कहा जाता है। क्योंकि यह मत सामान्य अथवा साधारण जनता के विचारों का प्रतिनिधित्व करता है। लोक शब्द का शाब्दिक अर्थ है – संसार और आयत का अर्थ – दीर्घतात्मक विस्तार अर्थात् संसार में सर्वत्र फैला हुआ

* भारतीय दर्शन की प्रवृत्ति आध्यात्मिक है, किन्तु पूर्णतः नहीं बल्कि आंशिक रूप से जड़वादी या भौतिकवादी भी है।

– चार्वाक एक जड़वादी दर्शन (Materialistic Philosophy) है।

* जड़वाद उस दार्शनिक सिद्धांत का नाम है जिसके अनुसार जड़ ही या भौतिक तत्व ही चरम सत्य है तथा जिससे चैतन्य अथवा मन का आविर्भाव होता है।

– भारतीय दर्शन में ~~इस~~ जड़वाद का एकमात्र उदाहरण चार्वाक दर्शन है।

– चार्वाक दर्शन के प्रणेता बृहस्पति हैं।

* चार्वाक दर्शन को 'लोकायत मत' भी कहा जाता है। क्योंकि यह साधारण या आम जनता के बीच फैला हुआ था।

* राधाकृष्णन का विचार है कि चूंकि चार्वाक 'इस लोक' में विश्वास करता है, ~~पर~~ परलोक में नहीं इसलिए इसे लोकायत दर्शन कहा जाता है।

– चार्वाक दर्शन के सम्बन्ध में कहा जाता है कि –

(i) चार्वाक नास्तिक (Heterodox) है क्योंकि यह वेद, ईश्वर और पुनर्जन्म / परलोक को नहीं मानते हैं।

(ii) चार्वाक प्रत्यक्षवादी (Positivist) है क्योंकि एक मात्र प्रत्यक्ष प्रमाण को यथार्थ मानते हैं।

(iii) सुखवादी (Hedonist) है क्योंकि सुख या काम को एक मात्र जीवन उद्देश्य या मूल लक्ष्य मानते हैं।

(iv) स्वभाववादी है- चार्वाक के अनुसार जड़भूतों के अंतर्निहित स्वभाव से ही जगत की उत्पत्ति हो जाती है।

(v) यदृच्छावादी है, क्योंकि इनके अनुसार संसार की उत्पत्ति किसी प्रयोजन-साधन के लिए नहीं हुई है। संसार तो जड़ तत्वों का आकस्मिक संयोग है।

जयराशि

([illegible] / [illegible])

जयराशि भट्ट के - तत्वोपप्लवसिंह ग्रंथ में चार्वाक दर्शन का चर्चा पाते है।
कृष्णपति मिश्र की कृति - प्रबोधचन्द्रोदय में चार्वाक सिद्धांत के विषय में वर्णन है - प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है, पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु ये चार महाभूत है। इन्द्रिय सुखोपभोग ही मानव जीवन का लक्ष्य है, परलोक नहीं, मृत्यु ही मोक्ष है, तथाकथित 'आत्मा' जड़ का ही विकार है।

- माधवाचार्य के - सर्वदर्शन संग्रह के प्रथम अध्याय में चार्वाक दर्शन का विवरण दिया गया है - वेदों का निन्दा, कर्मकाण्ड की निन्दा, यज्ञ, श्रद्धा की व्यर्थता को बताया गया है।

- बृहस्पति के कुछ सूत्र, जो विविध दार्शनिक ग्रन्थों में वर्णित है, इस प्रकार है: —

(i) पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि ही तत्व है। अर्थात

'पृथिव्यप्तेजोवायुरिति तत्वानि'

(ii) इन्हीं चार भूत से शरीर, इन्द्रिय और विषय बनते है।

(iii) जड़ तत्वों के मिश्रण से चैतन्य उत्पन्न होता है।

(iv) काम ही एकमात्र पुरुषार्थ है।
काम एवैकः पुरुषार्थः

(v) मरण ही मोक्ष है।
मरणमेवापवर्गः।

* चार्वाक दर्शन का प्रसिद्ध श्लोक है जो चार्वाक दर्शन को दर्शाता है -

यावत् जीवेत सुखम् जीवेत।
ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत॥